व्यवस्था परिवर्तन (स्थापित 23.01.2000)

601, राहित हाऊस, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली–110001, संरक्षक डा0 शिवराम सिंह गौर फोन 9453286099
राष्ट्रीय अध्यक्ष संसार चन्द्र, फोन 8800901448 / 8800598564
2019 के लोक सभा चुनावों में संसार चन्द्र अखिल भारतीय समाजवादी काग्रेस के उम्मीदवार है,
जिसका लक्ष्य भी व्यवस्था परिवर्तन है।
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष केसरी सिंह गुज्जर, फोन 9310173131
मुख्य प्रचारक अनुज कौशिक फोन : 9717980302
Email : changeofsystem8@gmail.com, Website : www.vyavasthaparivartan.org (In Hindi)

चुनाव घोषणा पत्र 2019

1. किसी भी देश की समस्याओं का सही तथा स्थाई समाधान उसी देश की संस्कृति में सोई हुई शक्तियों को पुर्नजागृत करके ही किया जा सकता है। हमारे दिए गए सुझाव संविधान संशोधन से ही संभव है, इसके लिए हमें लोकसभा, राज्यसभा तथा 12 राज्यों में 2/3 बहुमत चाहिए।
2. दिल्ली, हरियाणा तथा NCR (राजधानी क्षेत्र) को मिलाकार वृहत दिल्ली प्रदेश (इन्द्रप्रस्थ प्रदेश) पूर्ण राज्य बनाया जाये। इसमें जमीन से सम्बन्धित तथा अन्य मुकदमों को न्याय प्रयागराज या चंडीगढ के बजाय दिल्ली में ही मिल सकेगा।
3. भारतीय संविधान की आत्मा प्रस्तावना (Preamble) में सबको "समान अवसर" देने की घोषणा है। परन्तु लिपिक (Clerk) की गलती से बाकी संविधान में इसे "समान अधिकार" लिखा है। इस भूल को सुधार कर सब जगहों पर "अधिकार" के स्थान पर "अवसर" लिखा जाये।
4. समान अवसर का मतलब यह है सभी को पैदा होने से मरने तक समान भौतिक अवसर मिलें। व्यवस्था परिवर्तन सरकार जब सभी बच्चों बच्चियों को सरंक्षण देकर उन्हें रोजगार की गारंटी, रोजगार देने वाली शिक्षा और स्वास्थ सेवा दे भी दें। तब भी बच्चे जब वयस्क होंगे तो अमीरों की सन्तानों को उत्तराधिकार में अपार धन और गरीब की सन्तानों को थोड़ा धन या कर्ज ही मिलेगा। **अतः हमें संविधान में संशोधन करके ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे सभी को अधिकतम उत्तराधिकार 1 किलो सोने के मूल्य की सम्पत्ति मिले।** इस विषय पर पूर्ण जानकारी के लिए हमारी ऊपर लिखी Website पर "प्राकृतिक दर्शन" पुस्तक हिन्दी भाषा में 40 पेज पढें। उस पुस्तक के ज्ञान के आधार पर अब सवाल है कि "पूत सपूत तो क्यों धन संचै, पूत कपूत तो क्यों धन संचै,"
5. भारत की आबादी दुनियाँ की आबादी का 20 प्रतिशत है जबकि भारत की भूमि दुनियाँ की भूमि का 2 प्रतिशत है। अतः जनसंख्या नियंत्रण के कड़े कानून बना कर सभी नागरिकों पर इसे लागू किया जाये।
6. पुरानी कहावत है कि "जब देश की सरकार व्यापारी, तब देश की प्रजा भिखारी" अतः सरकार पहले अपना काम करे यानि सभी को सुरक्षा, तुरन्त न्याय, कर संग्रह, मजबूत मुद्रा और विदेशों से जैसे को तैसा सिद्धान्त पर सम्बन्ध बनाएं।
7. "जब व्यापारी चलाऐं सरकार, तो देश का हो बंटा धार" अतः उद्यमी और व्यापारी अपने धन के प्रभाव से चुनाव परिणामों को न तो प्रभावित करने का प्रयास करें न ही चुनाव के बाद सरकार की नीतिओं को प्रभावित करने का प्रयास करें। वे ईमानदारी से उद्योग व्यापार करें और ईमानदारी से सरकार को कर दें।
8. भारत की महान दान परम्परा को पुर्नजीवित किया जाये। इस परम्परा में हर नागरिक अपने बच्चों के वयस्क होने पर गृहस्थी के दाईत्वों से मुक्त होकर वानप्रस्थ बनता था। अब जंगल तो थोड़े से ही बचे हैं अतः हमारा सुझाव है कि वे "समाज प्रस्थ" बने। यानी अपनी बचत को बैंक में रखे और उसके ब्याज से अपना निजि खर्च चलाएं। वे समाज सेवा का कोई भी कार्य करें पर तनख्वाह नहीं लें। धनिक वर्ग समाज सेवा के लिए धन ट्रस्ट बना कर दें। इस प्रकार गाँधी जी के ट्रष्टिशिप की नीति का पालन हो सकेगा।
9. स्थानीय सुरक्षा गार्ड (Local Security Guard) को स्थानीय संस्थए (ग्राम सभा, मौहल्ला सभा, RWA, Sector Association) स्थानीय लड़के, लड़कियों को प्रशिक्षण देकर बनाए। इसके खर्च हेतु सदस्यता, चन्दा, धनी व्यक्तियों से दान तथा सरकार से भी खर्चा प्राप्त करें। मैगनाकार्टा चार्टर (जो 1215 में इंग्लैण्ड में बना था) के अनुसार सरकार को जनता कर इसलिए देती है, ताकि उसे सुरक्षा मिले। अब वर्तमान असुरक्षित माहोल में जब जनता स्वयं अपनी सुरक्षा की पहल कर रही है तो सरकार को जनता से प्राप्त किए गए कर का एक बड़ा भाग "स्थानीय सुरक्षा गार्ड" को देना होगा। यदि सरकार ऐसा नहीं करती है हम लाकतान्त्रिक एवं वैधानिक उपायों की मदद लेंगे। प्रमाण :– हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में "मलाना गाँव" में पिछले 2000 सालों से तथा उत्तर प्रदेश के हजारों गाँवों में सन् 1842 से स्थानीय सुरक्षा गार्ड के आधार पर सुरक्षा दी जा रही है और वहाँ कोई अपराध नहीं होते। ये सुरक्षा गार्ड राज्य पुलिस को सुरक्षा कार्यों में सहयोग करेंगे।

10. विदेश नीति जैसा को तैसा सिद्धान्त के आधार पर होगी। भारत मित्र देशों से राजनैतिक तथा प्रशासनिक दखल से मुक्त, व्यपारिक सिद्धान्तों पर आधारित, संयुक्त उद्यम (Joint Enterprise) बनाए। इस आधार नेपाल में बाँध बनाकर बिजली तथा सिंचाई की योजना, बंगला देश से जूट उद्योग श्रीलंका से चाय उद्योग, अफगानिस्तान से मेवों का निर्यात तथा मिश्र देश से कपास एवं कपड़ा उद्योग बना कर हम सभी को रोजगार दे सकतें हैं।
11. देश के खेत जंगल हरे भरे पहाड़ व साफ नदियों हर हालत में बचायें जायेंगे। चाहे इसके लिए कितनी भी कुरबानियों देनी पड़े। देश की विदेशी रोटी बन्द करके, विदेशी सूती कपड़ा बन्द करके देश का पानी साफ करके, जंगलों से बढ़िया–बढ़िया जड़ी–बूटियाँ पैदा करके पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश दुबारा से पवित्र किये जायेगे।
12. देश का या किसी राज्य का पतन वहीं से शुरु होता है जहां बुद्धिजीवी जमात और जनता गंभीर मुद्दों/मसलों पर खामोश रहती है।
13. गर न बदली फितरत तो मिट जाओगे ऐ हिन्द वालों, तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।
14. पूर्ण ज्ञान की परिभाषा है कि "यदि आपके पास" पूर्ण ज्ञान है तो उसके अनुसार कार्य करने पर आपको सफलता, सुख, सन्तोष और शान्ति मिलेगी। यदि आपको सफलता, सुख, सन्तोष और शान्ति नहीं मिल रही तो अपने ज्ञान को बढ़ाकर पूर्ण ज्ञान प्राप्त कीजिए और उसके अनुसार कार्य कीजिए, सफलता अवश्य मिलेगी। "नहिं ज्ञानेन सदृशं पवित्रं विद्यते"।
15. हम समस्याओं का हल उसी पश्चिमी मानसिकता (Mentality) का उपयोग करके नहीं कर सकते जिस पश्चिमी मानसिकता के द्वारा हमने उनको उत्पन्न किया है।
16. किसी भी देश की समस्याओं का सही समाधान उस देश की संस्कृति को सोई हुई शक्तियों को पुनः जागृत करके ही किया जा सकता है और इसे करेंगे।
17. नजर को बदलो तो नज़ारे बदलेंगे। सोच को बदलो तो सितारे बदलेंगे। किश्तियों को बदलने से कुछ न होगा, धार को बदलो तो किनारे बदलेंगे।
18. सरकारें तो बदलीं बार–बार, "व्यवस्था" बदलो अबकी बार।
19. तख़्त बदल दो, ताज बदल दो, बेईमानों का राज निज़ाम बदल दो।
20. जितनी बढ़े महंगाई, उतनी ही बढ़े सबकी कमाई। सरकार के सारे बजट का खर्च काटकर बाकी सारी रकम देश के सारे नागरिकों में समान रूप से बांट दी जायेगी।
21. योग्यता अनुसार सबको रोजगार, उससे बढ़े भारत का व्यापार।
22. व्यवस्था परिवर्तन की ललकार, नई सोच की हो सरकार।
23. जो बदल दे जमाना, वो निज़ाम चाहते हैं, जो मशरतों से भर दे दामन, वो सुबह और शाम चाहते हैं।
24. तारीख की नजरों ने ऐसे भी मंजर देखे हैं, जब लम्हों ने खता की और सदियों ने सजा पाई।
25. मैं तो अकेला ही चला था – ज़ानिबे मंजिल मगर, लोग साथ आते गए, कारवां बनता गया।
26. यूनान, मिस्त्र और रोमा सब मिट गए, सब जहां से पर बाकी बचा है नामों निशां हमारा।
    कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, दुश्मन रहा सदियों, दौरे जमां हमारा।
27. सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा, हम बुलबुले हैं, इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा.....।

आर्थिक सहयोग के लिए बैंक ऑफ इन्डिया खाता संख्या : 600510110003771, IFSC CODE : BKID0006005

व्यवस्था परिवर्तन की पूरी–पूरी जानकारी के लिए वेबसाइट www.vyavasthaparivartan.org, Desktop Computer पर पढ़िए।

खाता धारक

संसार चन्द्र

संस्थापक अध्यक्ष

8800598564, 8800901448

अनुज कौशिक

मुख्य प्रचारक (नौएडा यू.पी.)

9717980302